Q. No. अंतर-क्षेत्रीय व्यापार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से किस प्रकार भिन्न है?

व्यापार (Trade) मानव सभ्यता के विकास का आधार रहा है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान करता रहा है। समय के साथ व्यापार का स्वरूप विकसित हुआ और यह स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक फैल गया। वर्तमान वैश्वीकरण (Globalization) के युग में व्यापार केवल आर्थिक गतिविधि ही नहीं, बल्कि देशों के बीच सहयोग, विकास और समृद्धि का भी प्रमुख माध्यम बन गया है।

व्यापार को सामान्यतः दो प्रमुख भागों में बाँटा जाता है– अंतर-क्षेत्रीय व्यापार (Inter-Regional Trade) तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Trade)। दोनों का उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान करना है, लेकिन इनके कार्यक्षेत्र, नियम, मुद्रा, कर व्यवस्था, जोखिम तथा आर्थिक प्रभावों में पर्याप्त अंतर पाया जाता है।

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार का अर्थ

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार से आशय उस व्यापार से है जो एक ही देश के विभिन्न राज्यों, प्रांतों या क्षेत्रों के बीच किया जाता है। इसमें राष्ट्रीय सीमा पार नहीं की जाती तथा पूरे व्यापार पर एक ही देश की सरकार के कानून लागू होते हैं।

उदाहरण: बिहार से पश्चिम बंगाल चावल भेजना, पंजाब से राजस्थान गेहूँ भेजना, गुजरात से महाराष्ट्र कपड़ा भेजना।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वह व्यापार है जो दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात (Import) और निर्यात (Export) के रूप में किया जाता है। इसमें प्रत्येक देश के अलग-अलग कानून, व्यापारिक नीतियाँ, विदेशी मुद्रा नियम तथा सीमा शुल्क लागू होते हैं।

उदाहरण: भारत द्वारा अमेरिका को दवाइयों का निर्यात, जापान से इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का आयात, भारत द्वारा बांग्लादेश को कपास का निर्यात।

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विस्तृत अंतर

1. व्यापार का क्षेत्र

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार एक ही देश के विभिन्न राज्यों या क्षेत्रों तक सीमित रहता है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दो या दो से अधिक देशों के बीच होता है।

2. राष्ट्रीय सीमा

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में किसी भी राष्ट्रीय सीमा को पार नहीं करना पड़ता। इसके विपरीत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में राष्ट्रीय सीमाओं को पार करना आवश्यक होता है।

3. राजनीतिक नियंत्रण

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार पर केवल एक ही सरकार का नियंत्रण होता है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अनेक देशों की सरकारों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के नियम लागू होते हैं।

4. मुद्रा का प्रयोग

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में एक ही देश की मुद्रा का प्रयोग होता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विदेशी मुद्रा का विनिमय आवश्यक होता है तथा विनिमय दर (Exchange Rate) का प्रभाव पड़ता है।

5. सीमा शुल्क एवं कर

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में सामान्यतः सीमा शुल्क नहीं लगता। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में आयात शुल्क, निर्यात शुल्क, सीमा शुल्क तथा अन्य कर लगाए जाते हैं।

6. कानून एवं व्यापारिक नियम

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में एक समान कानून लागू होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रत्येक देश के अलग-अलग कानूनों एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों का पालन करना पड़ता है।

7. उत्पादन के साधनों की गतिशीलता

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में श्रम, पूँजी तथा तकनीक का आवागमन अपेक्षाकृत सरल होता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वीज़ा, निवेश नीति तथा अन्य प्रतिबंधों के कारण यह सीमित हो सकता है।

8. परिवहन लागत

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में परिवहन लागत कम होती है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में समुद्री, हवाई एवं लंबी दूरी के कारण लागत अधिक होती है।

9. जोखिम

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में जोखिम कम होता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में मुद्रा विनिमय, युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता, व्यापार प्रतिबंध तथा वैश्विक आर्थिक संकट जैसे जोखिम अधिक होते हैं।

10. भाषा एवं संस्कृति

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में भाषा एवं संस्कृति में अधिक समानता होती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भाषा, संस्कृति, धर्म तथा व्यापारिक परंपराओं की भिन्नता के कारण कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

11. दस्तावेज़ी प्रक्रिया

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में दस्तावेज़ कम होते हैं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कस्टम क्लियरेंस, बिल ऑफ लेडिंग, बीमा, विदेशी मुद्रा प्रमाणपत्र, आयात-निर्यात लाइसेंस आदि आवश्यक होते हैं।

12. आर्थिक उद्देश्य

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार का उद्देश्य देश के विभिन्न क्षेत्रों में वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उद्देश्य विदेशी मुद्रा अर्जित करना, वैश्विक बाजार में विस्तार करना तथा आर्थिक विकास को गति देना है।

13. प्रतिस्पर्धा

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में प्रतिस्पर्धा सीमित होती है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विश्व स्तर की प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।

14. मूल्य निर्धारण

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में कीमतें राष्ट्रीय बाजार की परिस्थितियों पर निर्भर करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कीमतें वैश्विक मांग, आपूर्ति तथा विनिमय दर से प्रभावित होती हैं।

15. उदाहरण

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार: बिहार से उत्तर प्रदेश चीनी भेजना।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार: भारत द्वारा अमेरिका को आईटी सेवाओं का निर्यात तथा रूस से कच्चे तेल का आयात।

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार के लाभ

- देश के भीतर वस्तुओं का संतुलित वितरण होता है।
- परिवहन एवं व्यापार लागत कम रहती है।
- व्यापारिक प्रक्रिया सरल होती है।
- राष्ट्रीय बाजार का विकास होता है।
- क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है।
- छोटे एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।
- राष्ट्रीय एकता एवं आर्थिक समन्वय मजबूत होता है।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ
- विदेशी मुद्रा अर्जित होती है।
- आधुनिक तकनीक एवं मशीनों की उपलब्धता बढ़ती है।
- उद्योगों का विस्तार होता है।
- रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं।
- वैश्विक बाजार तक पहुँच प्राप्त होती है।

निष्कर्ष

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों किसी भी अर्थव्यवस्था की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। अंतर-क्षेत्रीय व्यापार देश के भीतर संसाधनों का संतुलित वितरण, राष्ट्रीय बाजार का विकास तथा क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायक होता है। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विदेशी मुद्रा अर्जित करने, आधुनिक तकनीक प्राप्त करने, औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन तथा वैश्विक आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देता है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में दोनों प्रकार के व्यापार एक-दूसरे के पूरक हैं और किसी भी राष्ट्र के सतत एवं समावेशी आर्थिक विकास के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं।